में होइत बात-बेवहार के कोई खास असर न पड़े। ऊ सही रस्ता पर चलेला परेरना दे हथ आउ खुद भी आगे-आगे चलऽ हथ बिना ई सोचले कि हमरा पीछू-पीछू कोई आवइत हे कि न।

विनोबा जी

एगो नाटा कद-काठी के गेहुँआ रंग के अदमी, बित्ता भर के दाढ़ी, कंधा में लटकइत झोला, हाथ में तिरसूल इया खेलउना वला गदा, ठोर पर कोहड़ी अइसन मुसकान, गोर में चप्पल, जब-तब आँख में दहकइत इँगोरा, कभी नंग-धड़ंग आउ कभी धोती-कुरता पेन्हले भासन देइत इया केकरो से गाली-गलौज करइत जे तस्वीर तोहर आँख के सामने उभर जाहे, ऊ हथ विनोबा जी।

इनकर असली नाम बहुत कम लोग जानऽ हथ, मगर इनकर करनी-करतूत के खिस्सा हजारो अदमी के जबान पर हे। इनकर अचार-विचार भूदान आंन्दोलन के जलमदाता संत विनोबा भावे के उल्टा हे, मगर जहिना ई एगो हाई इस्कूल के अस्थापना करेला अप्पन खरीदल आउ हथिआवल सब्भे जमीन दान कर देलन, ओही दिन से ई विनोबा जी कहावे लगलन।

एकर पहिले ई जनसेवक जी कहावऽ हलन। लोग बाग जब इनका विनोबा जी कहे लगलन, तब ई सोचलन कि हमरा सत्याग्रह करे के चाही। एक दिन घर आउ सम्पत्ति के बँटवारा लेल इनकर दुन्नो मामू में टंटघंट पसर गेल। दुनहूँ के मेल करावे ला ई अनसन पर बइठ गेलन। जब इनकर मामू मिल-जुल के रहे ला वादा कैलन तबहिएँ विनोबा जी अप्पन अनसन तोड़लन। एकर जवाब में विनोबा जी अप्पन पुरा जमीन-मकान मामू के दे के फक्कड़ बन गेलन आउ विनोबा कहावे लगलन।

एक दिन विनोबा जी एगो हलुवाई के दोकान में भरपेट लड्डू खयलन। जब ऊ मिठाई के दाम माँगे लगल तब ई पइसा के बदले एगो छूरी देके कहलन, 'लऽ ई छूरी। हम्मर पेट चीर के अप्पन सब्भे लड्डू निकाल लऽ।'

हलुवाई हक्का-बक्का हो गेल। ऊ पूरबे रुख अप्पन मुँह करके आउ दुन्नो हाथ जोड़ के बोलल– 'हे सुरुज भगवान! एकर इन्साफ तूहीं करिहऽ।'

ई घटना के दू दिन बाद विनोबा जी पगला गेलन। इनकर दिमाग के इलाज करावे ला मानसिक चिकित्सालय, काँके ले जाय पड़ल। अमेरिका इया यूरोप के

जतरा से लउटे पर जे गौरव केकरो होवऽ हे। ओही गौरव काँकि से लउटे पर विनोबा जी के होल हे। केकरो से बतकुच्चन करे घड़ी समझदार सरोता अनजान अदमी से कहऽ हथ–''भाई! इनका से बहस मत करऽ। ई काँकि रिटरन हथ।''

विनोबा जी बिहार सरकार के मातहत वेतनभोगी जनसेवक हथ। एक बार बी.डी.ओ. साहेब सरकारी करजा वसूल करे ला इनका आदेस देलन। ई किसान से रुपइया लेके अप्पन इस्कूल के विकास में खरच कर देलन। बी.डी.ओ. साहब कानूनी दाव-पेंच के चक्कर में न उलझलन। ऊ इनकर वेतन से दस किस्त में करजा के रुपइया वसूल कैलन। तब से कउनो अफसर इनका रुपइया उगाहे के काम न दे हथ।

मगर विनोबा जी के कउनो अदमी घूसखोर न कह सकऽ हे। नियम कानून के पाबंदी में रहके ई कोल्हू के बैल नियन काम न करऽ हथ। आज के जनसेवक लायक ऊ हइये न हथ। आज तो एन्ने-ओन्ने हाथ फैलावे वाला, तीन तेरह करे वाला ढेर लोग जनसेवक हो गेलन हे, मगर विनोबा जी सैकड़न गाँव में हजारो कुइयाँ बिना कमीसन लेले खनवा देलन, सैकड़ो बोरिंग धँसवा देलन आउ काम के बदले अनाज इस्कीम के तहत कहूँ रोड पास करवा देलन, तो कहूँ अहरा पर भर पोरसा मटियो देवा देलन। घूस लेना इया कमीसन के रुपइया खाना ई अप्पन फह-फह उज्जर धोती में दाग लगावल बूझऽ हथ। विनोबा जी घूस लेबो करथ तो केकरा ला? बेटा-बेटी तो हे न इनका।

विनोबा जी के खाय–पीये से कउनो परहेज न हे। ई मुरगी के अंडा से लेके सूअर के मांस तक खा हथ। यारी में छोड़ल जूठा के ई परसादी मानऽ हथ। ई कहऽ हथ 'भगवान राम भी तो सबरी के जूठा बेर खैलन हल। जूठा खाय में ई हिन्दू, मुसलमान, हरिजन, बाभन में कुच्छो फरक न करऽ हथ।

विनोबा जी के ताड़ी इया दारू पीये में कउनो चुनौती न दे सकऽ हे। मगर अप्पन पइसा से पीये के लत इनका न लगल हे। 'अनकर चुक्का, अनकर घी, पाँड़े के बाप के लगल की'। जानल–पहचानल पासी इनका देख के अप्पन रास्ता बदल देहे।

विनोबा जी निडर अदमी हथ। ई केकरो से कनफुसकी न करऽ हथ। इनका से बोले बतिआवे घड़ी कउनो अफसर के गंभीरता से सोचे पड़ऽ हे। एक बार सरकारी

सब्दार्थ :

मारफत	:	द्वारा
बेबस	:	लाचार
बुतरू	:	बच्चा
इँगोरा	:	दहकइत आग
अगलगउनी	:	झगड़ा लगावे वाली,
पुंठी	:	अनाज निकालेवाला एगो औजार
घुनलगउनी	:	बिगाड़ेवाली
गोस्सा	:	क्रोध
समांग	:	घर के मरद सदस्य
मुहाल	:	अभाव
मसोमात	:	विधवा
सुलोचनी	:	सुंदर आँखवाली
हुलस	:	उमंग, खुसी
सरजाम	:	इंतजाम
दरकल	:	फूटल, दरार पड़ल

●

लेखक-परिचय :

नाम : राम विलास 'रजकण'

जनम : 11 फरवरी, 1942

जनम-अस्थान : कटारी, पत्थरकट्टी, गया

सिच्छा : एम.ए.

पेसा : सिच्छक

परकासित पुस्तक :

कविता संकलन—(1) वासन्ती, (2) रजनीगंधा, (3) पनसोखा (4) दूज का चान (5) कथांकुर (कहानी संकलन) (6) धुमैल धोती (उपन्यास) (7) सबरी (खंड काव्य)। **पत्रकारिता**–नवभारत टाइम्स में 'महतोजी के दलान' नाम से कॉलम लिखऽ हलन। **पुरस्कार**— (1) धुमैल धोती' उपन्यास ला 'डॉ० राम प्रसाद सिंह साहित्य पुरस्कार' (2) मगही साहित्य सम्मेलन, अछुआ, पटना से 'मगही साहित्य प्रवीन' सम्मान

पाठ-परिचय :

'विनोबाजी' सिरसक पाठ 'सबद-चित्र' के एगो सुन्दर नमूना हे। 'सबद-चित्र' साहित के एगो अइसन विधा हे जेकरा में मुख्य पात्र के चित्र खींच देवल जाहे। सबद के द्वारा खींचल जायवाला चित्र में पात्र के रंग-रूप के अलावे ओकर गुन-दोस भी साफ-साफ जनाय लगऽ हे। रचना के नायक एगो अइसन पात्र होवऽ हे जे कभी न कभी लेखक के सम्पर्क में रहल हे।

'विनोबा जी' में लेखक 'रजकणजी' नायक के एकदम से सच्चा चित्र खींच देलन हे। पढ़ला पर अइसन बुझा हे कि विनोबाजी के कहीं न कहीं देखली हे। उनकर कद-काठी, बात-बेवहार आउ रहन-सहन के खाका खिंचा जाहे पाठक के दिमाग में। विनोबा जी एकदम से अलग किसिम के इन्सान हथ, जिनका पर समाज

(घ) अनकर माल पर भेल झमकउआ आ छीन लेलक मुँह में गेल कौआ।

(ङ) ओकर इसकुलिया डरेस के तितकी छू–छू के देखऽ हल।

11. 'दरकल खपरी' कहानी से सम्बन्धित एंगो प्रस्नोत्तरी तैयार करऽ आउ ओकर जवाब लइकन से पूछऽ।

भासा-अध्ययन :

1. "दरकल खपरी" कहानी के सीर्सक काहे रखल गेल हे। एक्कर आउ दोसर सिरसक का हो सकऽ हे ?
2. नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य में अइसन प्रयोग करऽ कि ओकर अरथ आउ स्पस्ट हो जाए।

   अँचरा में समेटना, बेबस होना, तितकी लगना, गियारी में घंटी, सोन्ह, डिरिआयल मिरचाई, बीचबचाव करना, सात पुरसी के ऊपर पैंच करना, माल मुँह में देखना, जहाज पर उड़ना।
3. नीचे लिखल सबद से विसेसन बनावऽ—

   घर, चुनाव, मुँह, परिवार, देह
4. नीचे लिखल सबद के पर्यायवाची सबद बतावऽ—

   नइहर, बाघ, हवा, सुरुज, देह
5. कहानी के ऊ पंक्ति के चुनके बतावऽ जेकरा में अनुप्रास अलंकार आयल हे।
6. कहानी में आयल ठेठ मगही सबद के एगो सूची बनावऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. 'दरकल खपरी' के नाटक बनाके इस्कूल में खेलऽ।
2. 'परिवार टूटे नयँ' एकरा पर एगो परिचर्चा के आयोजन करऽ।

2. पुतोहू का उलाहना दे रहल हे?

3. बुलकनी माय दने मुँह कर के का बोलल?

4. माय के गोस्सा कपार पर चढ़ गेल तऽ ऊ का बोललक?

5. बँटवारा काहे भेल?

6. बुलकनी के उपदेस में समाधान के जरूरत हल, अइसन काहे कहल गेल हे?

लिखित :

1. कहानीकार के परिचय दऽ आ दूगो रचना के नाम बतावऽ।
2. 'दरकल खपरी' कहानी के सारांस लिखऽ।
3. बुलकनी के चरित्र–चित्रन करऽ।
4. कहानी में आयल सहायक पात्र के चरित्र–चित्रन करऽ।
5. कहानी में समाज के कउन कटु सत्य के उजागर कयल गेल हे?
6. कहानी के तत्व बतावऽ।
7. कहानी के तत्व के अधार पर 'दरकल खपरी के समिच्छा करऽ।
8. तोरा दृस्टिकोन से कथोपकथन कइसन लगल आ काहे?
9. नीचे लिखल गद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ

   (क) महाभारत तऽ बाते से सुरू होवऽ हे। बान तऽ चलऽ हे अंत में।''

   (ख) ''हम तऽ महुआ खोछड़ से अलिअइ हे। जब न तब हमरें पर बरसइत रहतो। दीदी तऽ दुलरी हइ। सब फूल चढ़े महादेवे पर।''
10. नीचे लिखल पंक्ति में का भाव छिपल हे?

    (क) खदड़ी में लड़ाई विस्तार लेवे लगल। माय लेल सब बरोबर बाकी ढेस बढ़े प्रीत घटे।

    (ख) एकसरे में सब खिस्सा फाड़ेफाड़ सुना देलक।

    (ग) चुटकी भर महुआ से पेट भरतउ?

–''अइना रख दा नुनु। तोरो तेल लगा के झाड़ देबो'' रनियाँ ओकर मुँह चुमइत बोलल।

छोटकी आन्ही–सन आल अउ झपटि के छौंरा के उठा ले गेल।

रनियाँ के काटऽ तऽ खून नयँ।

छौंरा लोट–लोट के कह रहल हल–''दीदी......हमरो केस झाड़ दे......आं......... आं......हमहू जइबउ।''

छोटकी खिसिया के तीन–चार चाँटा मुँह में जड़ि देलक। छौंरा के विरोध बढ़इत गेल।

रनियाँ उठल अउ चाची के गोदी से पुटुआ के छीनइत बोलल–''तूं दुनू गोतनी लड़ऽ हें, लड़, बाकि हमरा बुतरुअन के लड़इ ले काहे सिखलावऽ हे चाची? पुटुआ हमरे गोदी में मेला देखे जात.....भेलउ ने!''

आउ सच्चे, सब घर से एक्के साथ निकलल..........आगू–आगू चाची, ओकर पीछू रनियाँ आउ अन्त में माथा पर चाउर के मोटरी अउ हाथ में थइला लेले तितकी। पुटुआ रानी के गोद में अपन रँगल गोड़ देखि रहल हल। बुलकनी कहलक–''हे छोटकी, चउरा बेचवा दिहो.....छो किलो हो।''

छोटकी गियारी घुमा के बुलकनी के देखलक अउ मुसकि गेल।

–''थाली मोड़ पर झिल्ली किना दिहो......मुढ़ी साथे हइ'' मुसकइत बुलकनी छोटकी के समदलक।

पुटुआ रानी के मुँह अपन नान्ह हाथ से अपना दन्ने घुमावइत बोलल–''हमरा एगो जहाज किना दिहें दीदी..........फुर्र ऽऽऽ!'' बुलकनी के लगल जइसे ऊ सौंसे परिवार के साथ उहे जहाज पर उड़ल मेला देखे जा रहल हे।

अभ्यास–प्रस्न

मौखिक :

1. अदमी बाजारे से सत्तू काहे ले आवऽ हे?

मेला देखे जो। जाय दहो बेचारी के.....सालभार के मेला.....के देखलक हे। तूं नयँ चल रहली हें?''

–''रंग में भंग हो गेलो दइयो। मन तऽ छोट भे गेलो.....की जइयो। तूं जाइये रहलऽ हे, तऽ दुइयो के साथ कर लीहऽ।''

चान उग गेल हल। सोनफहक भेल कि दुइयो बेटी के जगा देलक–''रानीऽऽ.... तीतोऽऽ.....उठ जा! डीअम्मा भोरगरे आवऽ हउ। चोटी-पाटी कर ले। नहइमें तऽ धामे पर!'' माय बाँस के मूठ वला थइला में दुन्नू बेटी के समान समटे लगल–''कउन–कउन कपड़ा लेमहीं....दे जो।'' माय सिक्का से ठेकुआ के कटोरा उतारइत बोलल। एगो पोलिथीन में सत्तू अउ ठेकुआ के गइंठी देलक कि तितकी अप्पन कपड़ा आगू में रखके लपकल घर से बहरा गेल। रनियाँ के मन पेटी से दसहरा वला फरउक निकालइ के हल। ऊ मने–मन डर रहल हल–कहँइ माय डाँट ने दे। मेला देख के जइसहीं आल हल कि खोलवा लेलक हल कहइत–''रख दे रानी, लगन में पेन्हिहें।'' से ऊ माय के आगू आके खड़ी भे गेल।

–''देरी काहे कर रहलहीं हे। तलाय पर से मुँह–कान धोवइत अइहें।''

–''पेटी वला फरउक निकालिअउ माय?''

–''ऊहे पेन्ह के जइमहीं?''

रनियाँ गुम भे गेल। ऊ माय के आँखि पढ़े लगल।

–''मन हउ, तऽ निकाल ले।''

रनियाँ भित्तर दन्ने रपटल।

–''बरतनवन पर धेयान रखिहें। देख, एगो, थरिया, एगो लोटा, एगो गिलास अउ. पलास्टिक के मग रख दे हिअउ। नीमक, मिचाई, अमउरी अउ चीन्नी भी दे देलिअउ हें'' माय थइला के चेन लगवइत बोलल।

छोटकी भी जा रहल हल। ओकर टेनलगुआ छौरा साथ जा रहल रल। बेटी बड़की पर छोड़ दे रहल हल।

छौरा रनियाँ के आँध हल। केस चीरे घरी आगू में आके बइठ गेल अउ अइना उठा लेलक।

–''हम्मर खपरी दरकल हे।''

–''देहू न, हिफाजत से भुंजबो।''

–''नयँ ने देबो....फेन मुड़ली बेल तर! ने गूड़ खाम, ने कान छेदाम। सो बेरी के बेट–खौंकी से अच्छा एक बेर दू–टूक। साफ कहना, सुखी रहना।''

मझँली समझ गेल–बिदकल घोड़ी सम्हरे वली नयँ। मुदा अब होवे तऽ की? तारल–बराल अनाज भूँजइ बिना खराब भे जात। आग लगे अइसन परब–तेवहार के। ओकरो पर ई अजलत कि ककोलत वाला मेला। हमरे नाम से नइहरो में आग लग गेलइ। अब गाँव में केकरा–केकरा भुंजुन घिघिआइत चलूँ?

छोटका अखइना लेवे आल तऽ कचहरी गरम देखलक। बात सवाद के बोलल–''भउजी, खपरी दरके के पहिले तार दुनू के मने दरक गेलउ। की करमही, अब तोरा दुनू में बइना–पिहानी से चलि के गोतियारी भी समाप्त भे जइतउ। की करमही.....दुनिया के दोस हइ।''

बुलकनी के उपदेस के नयँ, समाधन के जरूरत हल। ऊ, उठल अउ पड़ोस में चलि गेल। तरेगनी के भी एकर गोतनी से तरपट चल रहल हल। बुलकनी के मुँह से ओकर सिकायत सुनके अच्छा लग रहल हल। ऊ हुलस के कहलक–''मायो हइये हइ एकछित्तर। ले आवऽ अनाज आउ भूंज ला। घटल–बढ़ल गाँव में चलबे करऽ हे।''

बुलकनी धरफराल घर आके रनियाँ के माथा पर अनाज के टोकरी धैलक आउ कहलक–''तारो घर चल, हम जरामन लेके आवऽ हिअउ।'' अइसईं एक घर पहर रात बीतइत–बीतइत भुँजान–पिसान से छुट्टी मिलल। लस्टम–फस्टम बुलकनी रोटियानी अउ सतुआनी के सरजाम जुटइलक। राह कलउआ लेल ठेकुआ अलग से छान देलक। निस्फित भेल तऽ धेयान तितकी दन्ने चलि गेल–अभी तकम नयँ आल हे। ई छौंरी के मथवा जरूर खराब भे गेलइ हे।

रनियाँ रोटी ठोक रहल हल। बुलकनी पूछइत–पूछइत सुलोचनी घर गेल तऽ देखऽ हे दुनू एगो थइला में मेला के समान सरिया रहल हे। बुलकनी भनके लगल तऽ सुलोचनी के माय कहलक–''दिनों भर बेचारी हमरे घर में रहल। कह रहल हल कि हम मेला देखे नयँ जाम। सुलोचनी किरिया देलकइ हे–हम्मर मरल मुँह देख जो

मसोमात रूप देख के बड़का समझइलक–''मँझली के केकरा भरोसे एकल्ले छोड़महीं। हम्मर जिनगी भर अँगना एक्के रहे दे। चूल्हा अलग कइलें, अलग रख, बाकि रह मिल–जुल के, एक्के परिवार नियन। बँटवारा धन के होवऽ हे, सम्बन्ध आउ मन के नयँ। भयपना छूरी से काटि के बाँटइ के चीज नयँ हइ छोटकी!'' आउ ऊ फूट–फूट के काने लगल हल।

बँटवारा के बाद से छोट–छोट बात पर बत–कुच्चन होवइत रहऽ हल। घटल–बढ़ल जहाँ टोला–पड़ोस में अइँचा–पइँचा चलऽ हे, वहाँ अँगना तऽ अँगने हे। कुछ दिन तक तऽ ठीक–ठाक चलल, बाकि अब अनदिनमा अउरत में महाभारत मचऽ हे। एन्ने एक महीना से मँझली–छोटकी में बोल–चाल बंद हल। बुलकनी तीसी के तेल पेरा के लैलक हल। एक किलो तेल के डिब्बा ओसरा पर रखिके गाय के पानी देखावइ ले गोंड़ी पर चलि गेल हल। रउदा में गाय–बछिया हँकड़ित हल। पानी पिला के आल तऽ देखऽ हे–छोटकी के तीन साल के छउंरी तेल के डिब्बा से खेल रहल हे। बुलकनी के मुँह से निकल गेल–''आबो दे खरुआ।''

बस बात बढ़ गेल। सात कुरसी के उकटा–पइँची भेल। हाथ उलार–उलार के दुनू अँगना में बाक–जुद्ध करे लगल। महाभारत तऽ बाते से सुरू होवऽ हे, बान तऽ चलऽ हे अन्त में। आउ अन्त में दुनू भिड़इ–भिड़इ के भेल कि हल्ला सुन के बड़का हाथ में सन काटइ के डोरा लेले आ धमकल। छोटकी सब दोस ओकरे पर मढ़ देलक–''अप्पन अंगना रहत हल तऽ आज ई दिन नयँ न देखे पड़त हल। धरमराज बनला हें तऽ सम्हारऽ मँझली के! नयँ तऽ छरदेवाली पड़ के रहतो।''

बड़का बीच–बिचाव कैलक–''बुतरू के बात पर बड़का चलत तऽ एक दिन नयँ बनत! ई बात दुनू गइँठी बान्हला। तनी–तनी गो बात पर दुनू भिड़ जा हऽ, सोभऽ हो? की कहतो टोला–पड़ोस!''

सान्त होवइ के तऽ हो गेल बकि दुनू तहिया से कन्हुअइले रहऽ हल। आज मँझली के काम आ पड़ल। अनाज भूँजइ ले एगो छोटकिये के पास खपरी हल। खा–पी के छोटकी के अवाज देलक–''अहे छोटकी.....जरी खपरिया निकालहो तो।''

मिला के बनइतो जादेतर लोग। अब चना के सत्तू तऽ पोलिथीन के पाकिट में बिकऽ हे....पचास रुपइये किलो।

बुलकनी झटपट आल आउ पहिले गेहूम के कठौती में फुलइ ले देलक। चूल्हा जोर के बुँट–मसुरी–केराय तारे लगल। तितकी अभी भी लउट के नयँ आल हल। रनियाँ सब गंदा कपड़ा सरिया के साफ करइ ले तलाय पर चलल कि माय टोककल–''बासिये मुँह हें.....कुछ खा नयँ लेलें?''

–''घोघी में फरही ले लेलिअइ हे.....फाँकते चल जइबइ।'' बोलइत घर से बहरा लगल।

–''तितकी के खोज तऽ! मियाँ के दौड़ मसजिद। आउ कहाँ जइतउ! सरधावा के साथ गाना–गोटी खेलऽ होतउ पँकड़िया तर।''

चारियो अनाज तार–तूर के बरकइ ले छोड़ के अदहन चढ़ा देलक। खिचड़ी बनते–बनते रानियो आ जात। बुलकनी चूल्हा में आँच लगावइत सोचलक।

आउ ठीक खिचड़ी डभकते रनियाँ तलाय पर से आ धमकल।

–''तितकी नयँ मिललउ?'' माय डब्बू लारइत पुछलक।

–''कहलिअउ तऽ आउ हमरे पर झुँझलाए लगलउ।''

–''आवे दे....भुखले रखमन। चल, पहिले खा–पी ले, फेन भूँजइत–पीसइत रहम।''

बुलकनी के काहे तो आज अपन मरद रहि, रहि के इयाद आ रहल हल। ढेना-ढेनी देख के सबूर कर लेलक हल–चलऽ..... इहे पिलुअन ओकर निसानी हे। एकर मरद दिल्ली वला चुनाव में मारल गेल हल। नया–नया लाल झंडा उठइलक हल। बड़कन के नजरचढ़ू भे गेल हल। भोट देके निकल रहल हल कि बूथ लुटेरवन छेंक लेलक। गनौर गाँव दन्ने भागल जा हल कि एक गोली ओकर कनपट्टी में आ लगल अउ ओजइ ढेरी भे गेल हल ऊ। आम चुनाव के आन्ही में बुलकनी के संसार उजड़ि गेल।

ऊहे साल बँटवारा भेल हल। तीनियो एक्के घर में रहऽ हल। एक्कक भित्तर हिस्सा पड़ल हल। अँगना एक्के हल। छोटकी छरदेवाली देवेला चाहऽ हल। भभू के

अइँटवा से कपरा फोर दिअइ। चल.....केराय पीट! ककोलत जायले ईहि छान–पगहा तोड़ा रहल हे। मोहनभोग बना के कलउआ देबउ कि ईहे–बूँटा, केरउआ, गेहुमा के सतुआ!''

तितकी गुमसुम केराय पीटे में लग गेल। ऊ भीत्तरे–भीतर भुस्सा के आग–सन धधक रहल हल–जाय दुन्नू माय–बेटी। हम तऽ महुआ खोछड़ से अइलिअइ हे। जब ने तब हमरे पर बरसइत रहतो। दीदी तऽ दुलरी हइ। सब फूल चढ़े महादेवे पर! ओकरे मानऽ ही, तऽ उहे कमइतउ अक्खज बलाय हिअउ। फेंक दे गनउरा पर। नयँ जाम ककोलत। कय तुरी नहा अइलूँ हें। कुछ देरी तऽ ऊ मनेमन झगड़इत रहल। गोस्सा में ओकर हाथ मसीन–सन चलि रहल हल। ऊ दुन्नू से पहिलहीं काम निबटा के बिन चुनले–फटकले उठल आउ गाँव दन्ने सोझिया गेल।

माय तितकी के रुख ताड़ गेल। एक छन तितकी के देखइत रहल, फेन रनियाँ पर नजर फेर गेहूम के बाल अईंटा से चूरे लगल। ऊ सोंच रहल हल–ई लुड़की जहाँ जइती, आग लगइती। रनियाँ भी तऽ इहे कोख के हे। कि मजाल कि कउनो काम में टार–बहटार करे। एकरा ऊँच–नीच के समझ हइ! जे कुल में जइतइ, तार देतइ।

अइसहीं बारह बजते–बजते काम निस्तरि गेल। सुरुज आग उगल रहल हल। रह–रह के बिंडोवा उठ रहल हल, जेकरा में धूरी–गरदा के साथ पलास्टिक के चिमकी रंगन–रंगन के फूल–सन असमान में उड़ रहल हल। पछिया के झरक से देह जरि रहल हल। भुस्सा के एगो ढेरी बना देलक। मिझराल भुस्सा गाय मस्स–मस्स खइतो। ऊपर से खाली पानी देखावे के काम। चारियो अनाज अलग–अलग लुग्गा में बान्हलक अउ खँचिया में सरिया के रनियाँ के माथा पर उठावइत बोलल–''चल.....हम तलाय पर से आवऽ हिअउ।''

कहइ के तऽ सत्तू–फत्तू कोय खाय के चीज हे! ई तऽ बनिहार के भोजन हे। बड़–बड़ुआ एन्ने से परकलन हे। अब तऽ गरीब–गुरबा लेल ई सत्तू मोहाल भे गेल। देखहो ले नयँ मिलऽ हे। पहिले गरीब अदमी मुठली सान के खा हल.....इमली के पन्ना.....आम के चटनी.....पकाल सोनहडिड़िआ मिचाय अउ पियाज......उड़ि चलऽ हल। बूँट–खेंसाड़ी तऽ उपह गेल। सवाद मेंटावइ लेल, मसुरी, गेहूम आउ मकई

एगो सहेली पढ़ऽ हल। ऊ बड़गो-बड़गो बात करऽ हल। जे तितकी बुझबो नयँ करे। ओकर इसकुलिया डरेस के तितकी छू-छू के देखऽ हल। एक दिन घाट पर सक्खी एकरा अपन डरेस पेन्हा देलक अउ कहलक हल-"कैसी इसकुलिया लड़की लगती है!" तहिया से तितकी इसकुलिया सपना में उड़े लगल। ऊ दिन घर आके माय से कहलक हल-"माय, हमहूँ पढ़े जइबउ!" तऽ माय बाघिन भे गेल-"तोर सउखा में आग लगउ अगलगउनी!" माय के लहलह इँगोरा-सन आँख तितकी के सपना के पाँखि सदा-सदा लेल फोंस के धरि देलक।

अस्पताल से लउट के बुलकनी जोजना बनइलक-घठिहन अनाज खरिहान में है। धरेसर भरोसे रहम तऽ भेल बिसुआ! ताक पर होवत नहियें। माय-बेटी पुठी से पीट के काम भर निकाल लेम....आगू देखल जात। से-से सबेरे उठल आउ बोफड़ी के खरिहान में पसार देलक। पछिया खुलल हल। खरंगते कते देरी लगत। तब तक जाही, ठौर-चौका करि के चलि आम।

आवे घरी छोटकी गोतनी अप्पन बकरी से कहि रहल हल-"गियारी में घंटी टुन-टुनइले चलऽ हल! बाप के हलउ? खोल लेलकउ ने करुआ माय। अनका माल पर भेल फमकउआ, छीन लेलक मुँह में गेल कउआ।"

बुलकनी के ई बात बान नियन करेजा में चुभल। ऊ अप्पन दुइयो बेटी के लेले दनदनाल खरिहान दन्ने सोझिया गेल।

बुलकनी गेहूम के बाल हँसुआ से छोपे लगल। रनियाँ पुंठी से बूँट के ढाँगा पीटे लगल। तितकी पिलुआ गेल हल। महुआ गाछ तर देखलक, चार गो छौड़िन टप-टप टपकल महुआ चुन रहल हे। ऊहो चूनइ में लगि गेल। सोचलक-सुखा के भुंड़रि के खाम बूँट के भुँजा के साथ।

बुलकनी के धेयान गेल-तितकी? ऊ एने-ओने ताकऽ लगल तऽ देखऽ हे घुनलगउनी महुआ चुन रहल हे। कसि के हँकइलक-"तितकीऽऽऽ! कहाँ मर गेलहीं गे। चुटकी भर महुआ से पेट भरतउ। गिल्ले धरी आगुए थरिया लेके दमदाखिल होमें.....चल!"

तितकी आवे के तऽ आल, बकि टुघरइत। माय के गोस्सा कपार चढ़ि गेल-"छिछिअइली, सोगपरउनी। लगऽ हइ, देह में समांगे नयँ हइ। मन करइ ईहे

बुलकनी के नइहरा–हुसेना में चार बिघा के खेती हल। माय पूरा परिवार अप्पन अँचरा में समेटले रहऽ हल। सब काम ओकरे से पूछ के होवे। माय लेल सब बरोबर बाकि बंस बढ़े पिरीत घटे। अब सब के अप्पन–अप्पन जनाना आ गेल। माय पुतहू सब के आगू बेबस भे गेल। ओकर सनेह के अँचरा तार–तार भे गेल। अब तऽ पुतहू अँचरा कसिके मुँह चमका–चमका आउ हाथ उलार–उलार के उलहना देवे लगल–''बुढ़िया के बस चलइ, तऽ हुसेनमा के मटिया तलक कोड़ के बेटिया हिंयाँ पहुँचा दय।'' माय जब बेटा से पुतहू के सिकायत कइलक तऽ तीनो बेटा अगिया बैताल भे गेल। तीनियो गोतनी के हड़कुट्टन भेल। छोटका थइल तड़ँगाह हल। बमक के बँगइठी उठइलक आउ अप्पन माउग के धुन देलक–''ससुरी काटि के धर देबउ जो हमर माय से उरेबी बोलले हें। ई चाल अप्पन नइहरा रसलपुरे में रहे दे।''

रसलपुर वली के शेखपुरा अस्पताल में आठ टाँका पड़ल हल। जादेतर छोटके परब–तेहवार रहे कुछ ने कुछ लेके बहिन हिआँ आवऽ हल। बुलकनी के पता चलल तऽ भउजाय के देखइ ले शेखपुरा चलि गेल। भउजाय मुँह फुलइले रहल। एकसरे में छोटका सब खिस्सा फारे–फार सुना देलक। कढुआल बुलकनी भउजाय भिजुन अपराधी–सन आधा घंटा तक रहल बाकि ऊ आँखियो उठाके एकरा दन्ने न देखलक। ठिसुआल बुलकनी भाय दन्ने मुँह करिके बोलल—''अरे नुनु, तों तो समझदार हें तोरा ई सब नय करइ के चाही। बेचारी माय–बाप छोड़ के तोर दुआरी अइलउ तऽ तोरे पर ने। अब एकरा जइसे निबाहहीं। तोर गोस्से बड़ी भारी हउ। गोस्सा थूक दे भयवा, तोरा हम्मर किरिया हउ!'' एतना बोलके बुलकनी भउजाय दन्ने मुड़ल अउ माथा पर हाथ रखइत बोलल–''हम्मर सुगनी के गति–मति दीहा गोरइया बाबा।'' एतनो पर जब भउजाय सुग से बुग न कइलक तऽ बुलकनी भाय से बोलल–''जा हिअउ बउआ.....घर में ढेना–ढेनी हउ।''

छोटका टीसन तक गाड़ी चढ़ावे साथ आल। गाड़ी में देरी हल। बहिन के एगो चाह पिलइलक आउ बुतरुअन लेल कँकड़ी खरीद के दे देलक। बुलकनी माय से मुलकातो नय कइलक, लउटि गेल।

बुलकनी के दुइयो बेटा हरियाना कमा हे। बेटी दुन्नू टेनलगर भे गेल हल। खेत–पथार में भी हाथ बँटावे लगल हल। छोटको तनी कड़मड़ करऽ हल। ओकर